Table of Contents

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. (I) [illegible]
5. (II) [illegible]
6. [illegible]

[illegible]

[illegible] 7 [illegible] 1925 [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

- [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

- [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?
- [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?
- [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?

[illegible]

- 7 [illegible] 1925 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
- [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]; [illegible] [illegible]: "[illegible] [illegible]", "[illegible] [illegible] [illegible]" [illegible]
- [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

- [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
- [illegible]: [illegible] [illegible]
- [illegible]: [illegible]



पाठ प्रवेश

ऐसा माना जाता है कि थोड़े में बहुत कुछ कह देना कविता का गुण है। जब कभी यह गुण किसी गद्य रचना में भी दिखाई देता है तब उसे पढ़ने वाले को यह मुहावरा याद नहीं रखना पड़ता कि 'सार-सार को गहि रहै, थोथा देय उड़ाय'। सरल लिखना, थोड़े शब्दों में लिखना ज़्यादा कठिन काम है। फिर भी यह काम होता रहा है। सूक्ति कथाएँ, आगम कथाएँ, जातक कथाएँ, पंचतंत्र की कहानियाँ उसी लेखन के प्रमाण हैं। यही काम कोंकणी में रवींद्र केलेकर ने किया है।

प्रस्तुत पाठ के प्रसंग पढ़ने वालों से थोड़ा कहा बहुत समझना की माँग करते हैं। ये प्रसंग महज पढ़ने-गुनने की नहीं, एक जागरूक और सक्रिय नागरिक बनने की प्रेरणा भी देते हैं। पहला प्रसंग गिन्नी का सोना जीवन में अपने लिए सुख-साधन जुटाने वालों से नहीं बल्कि उन लोगों से परिचित कराता है जो इस जगत को जीने और रहने योग्य बनाए हुए हैं।

दूसरा प्रसंग झेन की देन बौद्ध दर्शन में वर्णित ध्यान की उस पद्धति की याद दिलाता है जिसके कारण जापान के लोग आज भी अपनी व्यस्ततम दिनचर्या के बीच कुछ चैन भरे पल पा जाते हैं।

पतझर में टूटी पत्तियाँ

"पतझर में टूटी पत्तियाँ" रवींद्र केलेकर की एक महत्वपूर्ण रचना है जिसमें दो प्रसंग प्रस्तुत हैं: "गिन्नी का सोना" और "झेन की देन"।

(I) गिन्नी का सोना

शुद्ध सोना अलग है और गिन्नी का सोना अलग। गिन्नी के सोने में थोड़ा-सा ताँबा मिलाया हुआ होता है, इसलिए वह ज़्यादा चमकता है और शुद्ध सोने से मज़बूत भी होता है। औरतें अक्सर इसी सोने के गहने बनवा लेती हैं।

Prepzy

फिर भी होता तो वह है गिन्नी का ही सोना।

शुद्ध आदर्श भी शुद्ध सोने के जैसे ही होते हैं। चंद लोग उनमें व्यावहारिकता का थोड़ा-सा ताँबा मिला देते हैं और चलाकर दिखाते हैं। तब हम लोग उन्हें 'व्यावहारिक आदर्शवादी' कहकर उनका बखान करते हैं।

पर बात न भूलें कि बखान आदर्शों का नहीं होता, बल्कि व्यावहारिकता का होता है। और जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब 'व्यावहारिक आदर्शवादियों' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यावहारिक सूझबूझ ही आगे आने लगती है। सोना पीछे रहकर ताँबा ही आगे आता है।

चंद लोग कहते हैं, गांधीजी 'व्यावहारिक आदर्शवादी' थे। व्यावहारिकता को पहचानते थे। उसकी कीमत जानते थे। इसीलिए वे अपने विलक्षण आदर्श चला सके। वरना हवा में ही उड़ते रहते। देश उनके पीछे न जाता।

हाँ, पर गांधीजी कभी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे। बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे।

इसलिए सोना ही हमेशा आगे आता रहता था।

व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं। वे जीवन में सफल होते हैं, अन्यों से आगे भी जाते हैं पर क्या वे ऊपर चढ़ते हैं। खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें, यही महत्त्व की बात है। यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है। व्यवहारवादी लोगों ने तो समाज को गिराया ही है।

मुख्य बिंदु

- शुद्ध सोना और गिन्नी के सोने की तुलना
- आदर्श और व्यावहारिकता का संबंध
- गांधीजी के विचार और आदर्शवाद
- व्यवहारवादी और आदर्शवादी जीवन दृष्टिकोण

Prepzy

पाठ्य प्रमाण

- "शुद्ध सोना अलग है और गिन्नी का सोना अलग।"
- "गांधीजी कभी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे।"
- "सोना ही हमेशा आगे आता रहता था।"

हल किए गए उदाहरण

प्रश्न: गिन्नी के सोने और शुद्ध सोने की तुलना से लेखक क्या समझाना चाहते हैं?

उत्तर: लेखक गिन्नी के सोने और शुद्ध सोने की तुलना के माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि आदर्शों में व्यावहारिकता का थोड़ा मिश्रण उन्हें अधिक प्रभावी बनाता है, परंतु

[illegible] [illegible] [illegible] [

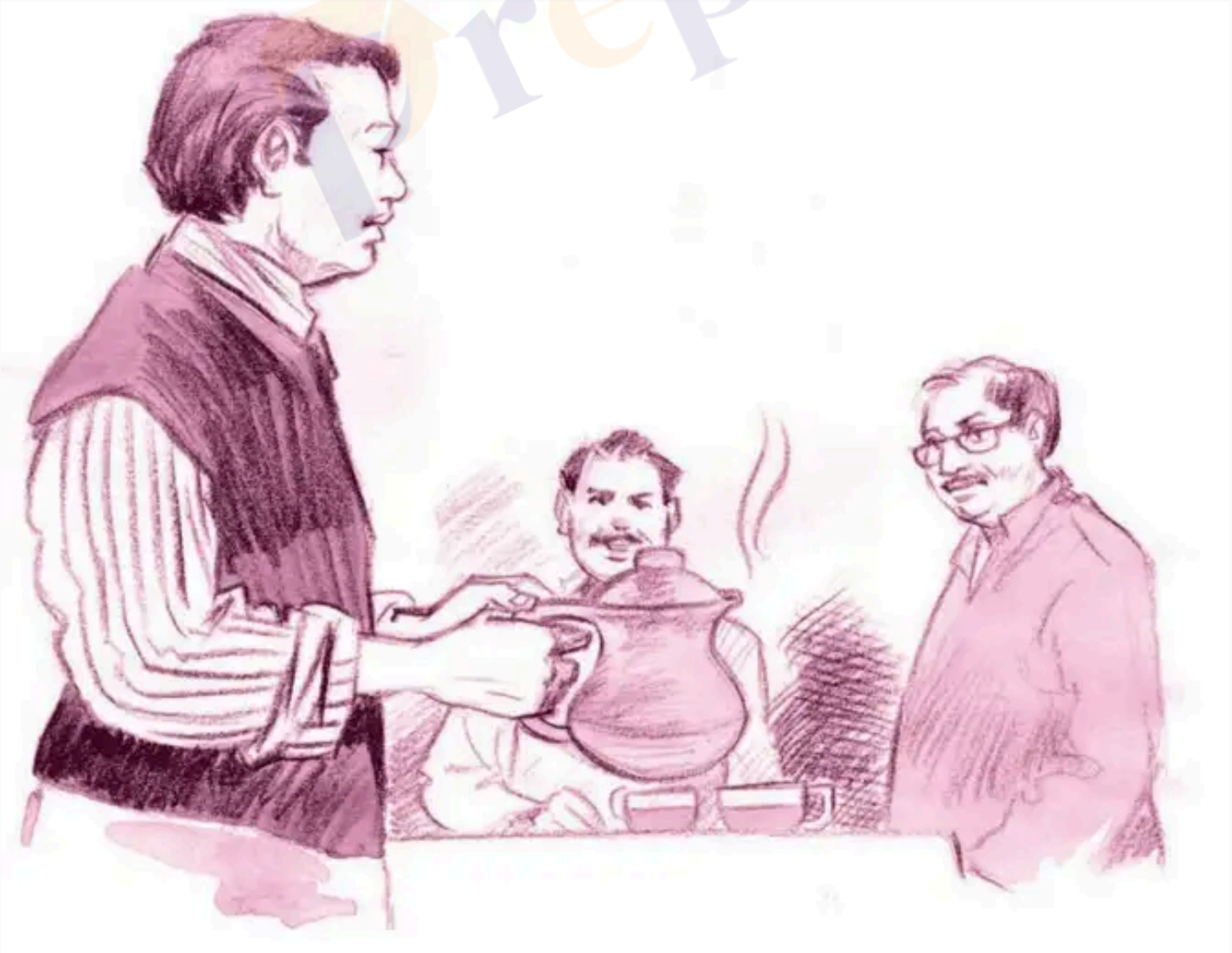

(II) झेन की देन

जापान में लेखक ने अपने मित्र से पूछा कि वहाँ के लोगों को कौन-सी बीमारियाँ अधिक होती हैं। जवाब मिला कि मानसिक रोग अधिक हैं क्योंकि जीवन की रफ़्तार बहुत तेज़ हो गई है। लोग दौड़ते हैं, बकते हैं और दिमाग पर अत्यधिक दबाव पड़ता है जिससे तनाव बढ़ता है।

लेखक को एक टी-सेरेमनी में ले जाया गया, जो जापान की चाय पीने की एक विधि है। यह विधि शांति और ध्यान की शिक्षा देती है। वहाँ की छः मंजिली इमारत की छत पर एक सुंदर पर्णकुटी थी जहाँ चाय बनाई जाती थी। चाय बनाने और पीने की प्रक्रिया इतनी गरिमापूर्ण और शांतिपूर्ण थी कि दिमाग की रफ़्तार धीरे-धीरे कम हो गई और लेखक को वर्तमान क्षण में जीने का अनुभव हुआ।

झेन परंपरा की यह देन जापानियों को मानसिक शांति प्रदान करती है और वर्तमान में जीने की कला सिखाती है।

Prepzy

मुख्य बिंदु

- जापान में मानसिक रोगों का बढ़ना
- जीवन की तेज़ रफ़्तार और तनाव
- टी-सेरेमनी की विधि और उसका महत्व
- वर्तमान क्षण में जीने की कला
- झेन परंपरा और ध्यान

पाठ्य प्रमाण

- "यहाँ के अस्सी फ़ीसदी लोग मनोरुग्ण हैं।"
- "चाय पीते-पीते उस दिन मेरे दिमाग से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए थे।"
- "टी-सेरेमनी में शांति मुख्य बात होती है।"

हल किए गए उदाहरण

प्रश्न: टी-सेरेमनी का जापानी जीवन में क्या महत्व है?

उत्तर: टी-सेरेमनी जापान में मानसिक शांति और ध्यान की एक विधि है जो जीवन की तेज़ रफ़्तार के बीच शांति प्रदान करती है। यह विधि वर्तमान क्षण में जीने की कला सिखाती है जिससे मानसिक तनाव कम होता है।

अभ्यास प्रश्न

- जापान में मानसिक रोगों के बढ़ने का मुख्य कारण क्या है?
- टी-सेरेमनी में चाय पीने की प्रक्रिया कैसी होती है?
- झेन परंपरा से हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर कुंजी

Prepzy

- जीवन की तेज़ रफ़्तार और दिमाग पर अत्यधिक दबाव के कारण मानसिक रोग बढ़ रहे हैं।
- चाय पीने की प्रक्रिया गरिमापूर्ण, शांतिपूर्ण और ध्यानपूर्ण होती है।
- वर्तमान में जीना और मानसिक शांति प्राप्त करना।

त्वरित संदर्भ

- टी-सेरेमनी : जापान की चाय पीने की विधि।
- झेन : बौद्ध धर्म की ध्यान पद्धति।
- मनोरुग्ण : मानसिक तनाव से पीड़ित व्यक्ति।

शब्दावली

- मानसिक - मस्तिष्क संबंधी
- मनोरुग्ण - तनाव के कारण मानसिक रूप से अस्वस्थ
- प्रतिस्पर्धा - होड़
- स्पीड - गति
- टी-सेरेमनी - जापान में चाय पीने का विशेष आयोजन
- चा-नो-यू - जापानी में टी-सेरेमनी का नाम
- दफ़्ती - लकड़ी की खोखली सरकने वाली दीवार
- पर्णकुटी - पत्तों से बनी कुटिया
- बेढब-सा - बेडौल-सा
- चाजीन - जापानी विधि से चाय पिलाने वाला
- गरिमापूर्ण - सलीके से
- भंगिमा - मुद्रा
- जयजयवंती - एक राग का नाम
- खदबदाना - उबलना
- उलझन - असमंजस की स्थिति
- अनंतकाल - वह काल जिसका अंत न हो
- सन्नाटा - खामोशी
- मिथ्या - भ्रम

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

- व्यावहारिकता - समय और अवसर देखकर कार्य करने की सूझ
- व्यावहारिक आदर्शवादी - व्यावहारिकता और आदर्शों का संतुलन बनाने वाला व्यक्ति

prepzy

- [redacted] - [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
- [redacted] - [redacted] [redacted] [redacted]
- [redacted] - [redacted] [redacted] [redacted]
- [redacted] - [redacted]
- [redacted] - [redacted] [redacted]-[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
- [redacted] [redacted] - 24 [redacted] [redacted] ([redacted] [redacted] [redacted])
- [redacted] [redacted] [redacted] - 22 [redacted] ([redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]) [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
- [redacted] - [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
- [redacted] - [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
- [redacted] - [redacted]
- [redacted] - [redacted]
- [redacted]-[redacted] - [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
- [redacted]-[redacted]-[redacted] - [redacted] [redacted] [redacted]-[redacted] [redacted] [redacted]
- [redacted] - [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
- [redacted] - [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
- [redacted]-[redacted] - [redacted]-[redacted]
- [redacted] - [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
- [redacted] - [redacted] [redacted]
- [redacted] - [redacted] [redacted] [redacted]
- [redacted] - [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
- [redacted] - [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]
- [redacted] - [redacted]